e-ISSN 2320 –7876 www.ijfans.org
Vol.11, Iss. 12, 2022
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

एक जिला एक उत्पाद योजना के अंतर्गत चयनित गुड़ के उत्पादन एवं विक्रय का आर्थिक अध्ययन : मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर जिले के विशेष संदर्भ में

दिनेश कुमार दुबे[1], डॉ नीलू गुप्ता[2]

1शोधार्थी, ओरिएण्टल यूनिवर्सिटी, इंदौर Email: dineshdubey1203@gmail.com

2 शोध निदेशक, सह-प्राध्यापक , ओरिएण्टल यूनिवर्सिटी, इंदौर Email: dr.neelu@orientaluniversity.in

शोध-सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन भारत सरकार के केंद्रीय खाद मंत्रालय द्वारा लागू की गयी 'एक जिला एक उत्पाद योजना ' के अंतर्गत नरसिंहपुर जिले में चयनित गन्ना से निर्मित गुड़ के उत्पादन एंव विक्रय की स्थिति व भावी संभावनाओं पर आधारित है | म.प्र. के हृदय स्थल में स्थित नरसिंहपुर जिला एक कृषि प्रधान जिला है, म.प्र. में सर्वाधिक गन्ना प्रदेश का लगभग 65 प्रतिशत नरसिंहपुर जिले में होता है, गन्ने की सर्वाधिक उत्पादकता के कारण यहाँ चीनी मिलों के साथ साथ सर्वाधिक गुड़ (सामान्य व जैविक) बनाने की इकाईयाँ संचालित हैं। जो किसानों की आर्थिक प्रगति का प्रमुख कारण बना हुआ है। शोध कार्य हेतु कार्यालय उपसंचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग नरसिंहपुर , जिला नरसिंहपुर एवं कार्यालय उपसंचालक गन्ना नरसिंहपुर , कार्यालय परियोजना संचालक आत्मा , जिला नरसिंहपुर एवं जिले की 5 प्रमुख कृषि उपज मंडियों से प्राप्त द्वितीयक आंकडों तथा जिले के गुड़ उत्पादक प्रगतिशील किसानों से प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों का आरेख एवं सारणियों के माध्यम से विश्लेषण किया गया है। जिले में किसानों द्वारा निर्मित गुड़ के निर्यात एंव स्थानीय विक्रय के माध्यम से 350 करोड़ से अधिक की आय प्राप्त होती है , जो उनकी आर्थिक प्रगति एवं उनके सर्वांगींण विकास का प्रमुख कारण है।

मुख्य शब्द - एक जिला एक उत्पाद , गन्ना उत्पादन, गुड़ उत्पादन, नरसिंहपुर जिला, गुड़ का निर्यात ।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

प्रस्तावना

भारत विश्व में क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवां एवं जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है। भारत की अर्थव्यवस्था अमेरिका, चीन, जापान, व जर्मनी के बाद पांचवे स्थान पर है।

भारत की जी.डी.पी. 2.62 लाख करोड़ डॉलर है, वर्ल्ड बैंक के अनुसार 2021 में भारत की जी.डी.पी. 3.1 ट्रिलियन डॉलर थी, जिसे 2030 तक 5 ट्रिलियन डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य है, व 2035 तक 10 ट्रिलियन डॉलर का लक्ष्य है ,जो चीन के बाद दूसरे सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी । I.M.F. के अनुसार भारत विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था है। हालांकि परचेसिंग पावर पेरेटी (ppp) के अनुसार तीसरी (चीन व अमेरिका के बाद) बड़ी अर्थव्यवस्था है।

भारत में लगभग 68.8 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में (2011 के अनुसार) निवास करती है। जिसकी आजीविका व विकास का केंद्र कृषि या कृषि पर आधारित प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष आर्थिक क्रियाएं व कुटीर ,लघु ,मध्यम व वृहद उद्योग है, जो भारत की कार्यशील आयु जनसंख्या (15-64 वर्ष) कुल जनसंख्या का 63.4 प्रतिशत है। इनमें कार्यशील जनसंख्या 39.8 प्रतिशत है , की आर्थिक प्रगति का प्रमुख आधार है।

भारत को विकास की गति में अधिक तीव्रता लाने विदेशी निर्भरता कम करने के लिए मेक इन इंडिया व आत्म निर्भर भारत जैसे कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा शुरू किये । जिनका उद्देश्य हर हाथ को काम दो एवं स्वरोजगार के अवसरों का अत्याधिक सृजन हो , घरेलू मांग में वृद्धि हो, कृषि को लाभ का धंधा बनाने जैसी सकारात्मक सोच के साथ विभिन्न योजनाओं के साथ-साथ भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा भारत सरकार के केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के द्वारा आत्मनिर्भर भारत के अधीन 'एक जिला एक उत्पाद ' (ODOP) योजना शुरू की गई। इसके अधीन प्रत्येक जिला की पहचान एक विशेष उत्पाद से होगी , जो उस जिला या क्षेत्र में विशेष रूप से उत्पादित होता है । जिसके लिए विशेष रूप से प्रयास किए जावे व उस उत्पाद को जिले के नाम से विशेष पहचान (Branding) दी जावे जिससे जिले की आय में वृद्धि की जा सके ।

मध्य प्रदेश भारत के मध्य में स्थित है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था में एक कृषि प्रधान राज्य के नाम से पहचाना जाता है। यहाँ की आबादी का 72.4 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। जिसकी आर्थिक प्रगति के केंद्र में कृषि या कृषि आधारित क्रियाएं या कृषि

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

पर आधारित कुटीर लघु मध्यम व वृहद उद्योग है, जो म.प्र. की कुल आयु जनसंख्या (15-64) वर्ष 65.7% है। इसमें वास्तविक कार्यशील जनसंख्या 43.5 प्रतिशत है जो भारत के औसत 39.8 प्रतिशत से अधिक है।

म.प्र. की अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्र (कृषि एवं पशुपालन) व कृषि आधारित क्रियाओं का प्रथम स्थान है । म.प्र. में रबी ,खरीफ व जायद की फसलों का उत्पादन खाद्यान्न व व्यासायिक फसलों के रूप में होता है । खाद्यान्न फसलों की तुलना में नगदी (व्यावसायिक) फसलों का उत्पादन व इन पर आधारित औद्योगिक क्रियाओं से अधिक आय प्राप्त होती है ,जो किसानों के साथ-साथ प्रदेश की आर्थिक संबलता का प्रमुख आधार है।

गन्ना इन्हीं प्रमुख नगदी फसलों में से एक है, जो उष्णकटीयबंधीय क्षेत्रो की प्रमुख त्रि-वर्षीय रबी मौसम की फसल है।म.प्र. में गन्ना की फसल नरसिंहपुर ,छिंदवाड़ा, बुरहानपुर, बैतूल, दतिया व बड़वानी आदि जिलों में प्रमुख रबी फसलों के रूप में होती है।

वर्तमान में म.प्र. में कुल गन्ना उत्पादन 65 प्रतिशत रकबा अकेले नरसिंहपुर जिले में लगभग 75 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में होता है। गन्ने की फसल के लिए मध्यम से काली मिट्टी, दोमट मिट्टी ,जिसमें सिंचाई की उचित व्यवस्था व जल का अनुमोदन तथा जिसका पी.एच. मान 6.5 से 7.5 के बीच होना उपयुक्त होता है।

गन्ने के उत्पादन के लिए उपयुक्त दशाएं नरसिंहपुर जिले में विद्यमान हैं । गन्ना की सर्वाधिक उत्पादकता जिले में किसानों के साथ अन्य लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक लाभ का आधार प्रदान कर रहा है। गन्ने का प्रयोग जिले में स्थापित चीनी मिलों के अलावा लगभग 30-35 प्रतिशत प्रयोग दो स्वाचालित खांडसारी मिल एवं वर्तमान में लगभग 3000 गुड़ निर्माण इकाइयों के द्वारा किया जा रहा है 2009-10 के पहले जिले में लगभग 26000 थी। 2009-10 के बाद चीनी मिलों की स्थापना के कारण यह संख्या घटकर लगभग 3000 गुड़ निर्माण इकाइयों तक सीमित हो चुकी है। गुड़ बनाने की इकाइयों में सामान्य व जैविक गुड़ का निर्माण किया जा रहा है। जिसकी कीमत सामान्य गुड़ 1800 रूपये प्रति क्विंटल से 3400-3500 रूपये प्रति क्विंटल, वहीं जैविक गुड़ की कीमत 70 रूपये प्रति किलो से 500 रूपये प्रति किलो तक है।

जिले में स्थापित नरसिंहपुर, करेली, गाडरवारा, तेन्दूखेड़ा व गोटेगांव मंडी के माध्यम से उत्पादित गुड़ का 90-95 प्रतिशत भाग विक्रय किया जाता है । जो स्थानीय स्तर के साथ साथ प्रदेश के बाहर भी विक्रय किया जाता है। जिससे अनुमानित

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

आय लगभग 350 करोड़ है। इसके अलावा किसानो द्वारा जिले में स्थित चीनी मिलों को गन्ने की बिक्री से भी लगभग 700 करोड़ की आय प्राप्त होती है। वहीं जिले मे गुड़ बनाने वाले लगभग 200 प्रगतिशील किसानो से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर 25 से 30 किसानों द्वारा जैविक गुड़ का उत्पादन किया जा रहा है। जिसमें बिना किसी रासायनिक पदार्थो व कीटनाशकों का प्रयोग किये बिना पूर्णत: प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप जैविक व नैसर्गिक तत्वों का प्रयोग कर गुड उत्पादन किया जा रहा है। जिले के 20 से 25 प्रमुख प्रगतिशील किसानो से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह पाया गया कि उन किसानों द्वारा लगभग 30-35 स्वादों (flavour) में गुड़ पाउडर, गुड़ केडवरी, गुड़ केण्डी , बिस्कुट , कैंडी , चाकलेट , तरल (शहद के समान) बर्फी आदि के स्वरूप में गुड़ का निर्माण किया जा रहा है । गुड़ के इन विभिन्न स्वरूपों को एक विशिष्ट पहचान देने के लिए इनकी ब्रांडिग करके म.प्र. व म.प्र. के बाहर व विदेशों में भी विक्रय किया जा रहा है।

भारत सरकार द्वारा आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत खाद्य प्रसंस्करण व उद्योग मंत्रालय द्वारा 'एक जिला एक उत्पाद योजना' का प्रारंभ माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा देश के 8 केंद्र शासित प्रदेश एंव 28 राज्यों के 707 जिलों में 137 अद्वितीय उत्पादों की विशिष्टता के साथ शुरू की गयी है। जिसमें प्रदेश स्तर पर एक विशेष उत्पाद की पहचान व जिला स्तर पर एक विशेष उत्पाद उस जिले की विशिष्ट पहचान बन गया है।

शोध अध्ययन 'एक जिला एक उत्पाद योजना' के विस्तृत वर्णन के साथ-साथ इस योजना के अंतर्गत नरसिंहपुर जिले में गन्ना से गुड़ उत्पादन एंव इसके विक्रय के संबध में विश्लेषणात्मक जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया।

उद्देश्य

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य एक जिला एक उत्पाद योजना का विस्तृत अध्ययन, इसके अधीन चयनित गुड़ उत्पादन की स्थिति व विक्रय (निर्यात सहित) से प्राप्त आय की जानकारी प्रदान करना है ।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

परिकल्पना

गन्ने की अधिक उत्पादकता के कारण जिले में अधिक गुड़ निर्माण व इसके विक्रय (निर्यात सहित) से प्राप्त आय , जो जिले के किसानों की आर्थिक सबंलता में सकारात्मक वृद्धि का प्रमुख कारण है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में जिले के प्रगतिशील किसानों से प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों व म.प्र. कृषि उपज मण्डी बोर्ड के अधीन जिले में स्थापित मंडियो से प्राप्त राजस्व के द्वितीयक समंकों का अध्ययन किया गया है ।

अध्ययन क्षेत्र

नरसिंहपुर जिला अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण मध्यप्रदेश ही नही, बल्कि भारत के भी मध्य में स्थित है, इसकी भौगोलिक स्थिति अक्षांश 22° से 45° उत्तर 23:15 उत्तर देशांतर 78° 38 पूर्व 79° 38 पूर्व है इसका क्षेत्रफल 5125.25 वर्ग किलोमीटर है, जो समुद्र तल से 359.8 मीटर ऊपर स्थित है। जिले की उत्तरी सीमा पर विंध्याचल और दक्षिणी सीमा पर सतपुडा पर्वत श्रृंखला फैली हुई है, नर्मदा नदी पूर्व से पश्चिम बहती है, जो मध्यप्रदेश सहित जिले की जीवन दायिनी है। 18 वीं शताब्दी में जाट सरदारो ने यहां भगवान नरसिंह के भव्य मंदिर का निर्माण कराया तब से गडरिया खेडा नाम का यह ग्राम नरसिंहपुर के नाम से प्रसिद्ध है ।

नरसिंहपुर मुख्यत: कृषि प्रधान जिला है, यहां खरीफ रबी एवं जायद फसलो का उत्पादन खाद्यान एवं व्यापारिक फसलो के रूप में होता है जिले में काली, दोमट, चिकनी, पथरीली एवं रेतीली मिटटी पाई जाती है, नरसिंहपुर की भूमि (कलमेटा हार बरमान के पास) एशिया की सर्वाधिक उपजाऊ भूमि के रूप में दर्ज है। जिले में कुआं तालाब,नदी,नहरो के साथ नलकूप के माध्यम से सर्वाधिक सिचांई की जाती है। जिले में वनो का प्रतिशत 26.55 है, यहां मिश्रित, कटीली झाड़िया एवं पतझण वाले वन पाए जाते है, जिनमें साल,सागौन,बांस,साज,महुआ,आम,खैर अचार, करौंदा,हर्रा आदि वन उपज प्रमुख है। नरसिंहपुर जिला खनिज संपदा से भी सम्पन्न है, इसमें सोप स्टोन, कोयला, डोलोमाईट, चूने का पत्थर आदि पाए जाते है। नरसिंहपुर जिले में उद्योगो में कृषि यंत्र लोहे का सामान गुड़ शक्कर, बीडी, दालमिले, तेल मिले आदि से संबंधित उद्योग स्थापित है। जिले का तापमान मई माह को छोडकर सामान्यत: सुखद रहता है, न्यूनतम

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

तापमान 25°-26° डिग्री सेल्सियस से अधिकतम तापमान 45°-46° डिग्री सेल्सियस रहता है, मई माह सर्वाधिक गर्म व दिसम्बर- जनवरी माह अधिकतम ठंडे रहते है, जिले में 90 प्रतिशत वर्षा जून से सितम्बर माह में होती है, औसत वर्षा अवधि 60 दिन है ।

मध्यप्रदेश् के गठन के साथ ही 01 नबंवर 1956 को नरसिंहपुर जिला अस्तित्व में आया, इसमें चार विधान सभा क्षेत्र (नरसिंहपुर,गोटेगांव,गाडरवारा एवं तेंदुखेड़ा) है, जिले में 06 ब्लॉक (नरसिंहपुर,गोटेगांव,चीचली,चावंरपाठा,करेली,साईंखेड़ा) इसमें 05 तहसीले एवं 446 ग्राम पंचायत तथा कुल 1077 ग्राम है,02 नगरपालिका क्षेत्र (नरसिंहपुर,गाडरवारा) एवं 06 नगर परिषद क्षेत्र(सालीचौंका, साईंखेड़ा, तेंदूखेड़ा,करेली,चीचली,गोटेगांव) है | जिले में 05 कृषि उपज मंडिया (नरसिंहपुर,गोटेगांव, गाड़रवारा,करेली,तेंदुखेड़ा) हैं | नरसिंहपुर जिले की कुल आवादी 2011 के अनुसार 1092141 है जिसमें 556618 पुरूष एवं 522523 महिलाएं है, जिले का जनसंख्या घनत्व 2013 है, जिले की साक्षरता दर 75.69 प्रतिशत एवं लिंगानुपात 920 है, शहरी आबादी 18.6 प्रतिशत एवं ग्रामीण आबादी 81.4 प्रतिशत है।

कृषि की प्रधानता एवं ग्रामीण आबादी की अधिकता के कारण जिले की अर्थव्यवस्था कृषि एवं कृषि पर आधारित अन्य क्रियाओं पर पूर्णत: आधारित है। गन्ना जिले की प्रमुख नगदी फसल है, जो जिले के किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार का महत्वपूर्ण कारण बनता जा रहा है ।

e-ISSN 2320 –7876 www.ijfans.org
Vol.11, Iss. 12, 2022
 © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

नरसिंहपुर जिले का नक्शा

स्त्रोत: www.mapsofindia.com

एक जिला एक उत्पाद योजना का सम्पूर्ण परिचय

देश के समग्र विकास के लिए आवश्यक है कि देश के समस्त मानवीय व भौतिक संसाधनों का समुचित उपयोग हो । कार्यशील आयु वर्ग की जनसंख्या को स्थानीय स्तर पर ही काम की उपलब्धता एवं उन्हें आर्थिक क्रियाओं में सहभागिता व इससे आर्थिक लाभ की प्राप्ति आदि सकारात्मक सोच के साथ भारत सरकार के केन्द्रीय खाद्य प्रसंस्करण एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत एक जिला एक उत्पाद योजना शुरू की है ।एक जिला एक उत्पाद योजना से बेरोजगारों को स्वरोजगार या अन्य रोजगार में संलग्न करने का प्रयास किया जावेगा । सूक्ष्म ,लघु ,कुटीर व मध्यम उद्योगो की स्थापना उस उत्पाद के अंतर्गत आने वाली आर्थिक क्रियाओं के लिए की

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

जावेगी जिससे स्थानीय स्तर पर लोगों की आय में वृद्धि होगी । उनके जीवन स्तर में सुधार होगा। परिणामस्वरूप जिला, राज्य व देश की आर्थिक प्रगति होगी। जिससे राज्य व देश की जीडीपी में वृद्धि होगी ।

सरकार द्वारा ODOP के अंर्तगत स्थानीय उद्योगों को आर्थिक , तकनीकी व अन्य प्रकार की सहायता उपलब्ध करायी जावेगी , उत्पादों की ब्रांडिग , विपणन , निर्यात में सहायता , अनुदान , ऋण व अन्य आवश्यक सहायता प्रदान की जावेगी, जिससे शीघ्रता व सरलता से ODOP के तहत चयनित उत्पाद व उससे जुड़ी आर्थिक क्रियाओं का विस्तार हो सके ।

ODOP योजना के मुख्य बिंदु

योजना का नाम - एक जिला एक उत्पाद

लाभार्थी	:	भारत के नागरिक
उधोगों की श्रेणी	:	सूक्ष्म ,लघु तथा मध्यम व्यापार व उधोग
आवेदन के प्रकार	:	ऑनलाइन
उत्पादों की सूची	:	प्रत्येक जिला हेतू विशिष्ट उत्पाद का चयन , चयनित सूची के आधार पर
उदेश्य	:	रोजगार व स्वरोजगार में वृध्दि हेतू सूक्ष्म ,लघु तथा मध्यम व्यापार व उधोगों को विकसित करना ।

आधिकारिक बेवसाइट : www.odopup:in , www.mofpi.gov.in

ODOP की विशेषतायें एंव लाभ

- रोजगार की प्राप्ति हेतु स्थानीय स्तर पर प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देकर उन्हें आर्थिक क्रियाओं में संलग्न करना ।
- जिला व राज्य के उधमियों , शिल्पकारों , बुनकरों व अन्य प्रतिभाओं से युक्त बेरोजगारों को संपूर्ण सुविधा उपलब्ध् कराकर रोजगार व स्वरोजगार के अवसर प्रदान करना है।
- योजना के अंर्तगत चयनित उत्पादों को स्थानीय स्तर के अलावा प्रदेश , देश व अतंर्राष्टीय मंच उपलब्ध कराना , ब्रांडिग , विपणन में विभिन्न सहयोग व सहायता प्रदान करना है।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

- इस योजना के अंतर्गत आने वाले उत्पादों व इनसे जुड़े स्थानीय कारीगरों व उधमियों को स्थापना से आने वाले 5 वर्षो तक अनुकूलतम राशि प्रदान करना है।
- इस योजना के तहत चयनित विशिष्ट उत्पाद के लिए स्थापित उधोगों को विशिष्ट पहचान प्रदान करना है।
- इस योजना के अंतर्गत आर्थिक क्रियाओं के विस्तार हेतु ऋण अनुदान सहित प्राप्त होता है ।
- इस योजना के अंतर्गत रोजगार प्राप्त करने वाले उधमियों को विभिंन्न प्रकार के सामान्य , तकनीकी व व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जावेगा , जिसमें उत्पादन , प्रक्रिया , भंडारण , पैकेजिंग, नये उत्पादों का विकास व विस्तार , व्यवसायिक संचालन एंव अन्य आर्थिक व तकनीकी सलाह जिससे उधमी निरंतर सफलता के आयाम प्राप्त कर सकें ।
- इस योजना के अंतर्गत चयनित विशिष्ट उत्पाद की पहुंच आमजन व स्थानीय स्तर के साथ-साथ देश्-विदेश में विशिष्ट पहचान प्रदान करना है ।

ODOP के उदेश्य

- इस योजना का मुख्य उदेश्य स्थानीय स्तर पर बहुलता से पाये जाने वाले उत्पादों जिनकी पहचान कम हो चुकी है या उनके पहचान को वर्तमान स्वरूप से और अधिक देश-विदेश स्तर पर विशिष्ट पहचान बढ़ाना , उत्पाद निर्माण और रचनात्मक प्रक्रिया को पुन शुरू कराना , इस हेतू क्षेत्र में औद्योगिक वातावरण का विस्तार कर कला उत्पादों को संपूर्ण सर्मथन प्रदान करना है ।
- इस योजना के द्वारा राज्य के प्रत्येक जिले में चयनित उत्पाद हेतु पारम्परिक शिल्प निर्माण की प्रक्रिया पर पुन: ध्यान केंद्रित करना, जिससे स्थानीय आर्थिक क्रियाओं को बढ़ाया जा सके , पारम्परिक उत्पादों को पुनर्जीवित करना , उत्पादको की आजीविका व गुणवत्ता में सुधार करना है ।
- इस योजना का लक्ष्य वित्तीय , उत्पादन और विपणन के लिए सहायता व उत्पादों के लिए एक नियमित बाजार वातावरण का निर्माण करना है ।
- कला उत्पादों के समुदायों के बीच आर्थिक व क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करना है ।
- स्थानीय स्तर पर उत्पादित विशिष्ट उत्पाद को बढ़ाने के लिए राज्य के विभिन्न जिलों में अतिरिक्त MSME क्षेत्रो का निर्माण करना है ।
- लाइव डेमो सेशन के लिए एक जिला एक उत्पाद और पर्यटन क्षेत्र के बीच एक सामान्य विपणन मंच विकसित करना और विशिष्ट उत्पादों को उपहार और स्मृति चिन्ह के रूप में विकसित करना है ।
- उत्पादन और आय बढ़ाने के लिए उत्पादों की उच्च गुणवत्ता बनाये रखना ,उसमे सुधार करना, पेकेजिंग ,डिजाइन करना, ब्रांण्ड स्थापित करना व मार्केटिंग के लिए भौतिक व ऑनलाइन बाजार व प्लेटफार्म उपलब्ध कराना है ।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

एक जिला एक उत्पाद योजना के अंर्तगत उप-योजनाएं :-

- सामान्य सुविधा केन्द्र योजना
- विपणन विकास सहायता योजना
- वित्त सहायता योजना
- कौशल विकास योजना

स्त्रोत: www. https://www.mpinfo.org/

एक जिला एक उत्पाद योजना के अंतर्गत म प्र के जिलो में चयनित विशिष्ट उत्पाद की सूची -

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

Sl. No.	District	ODOP
1	Agar Malwa	Orange / Citrus
2	Alirajpur	Custard Apple
3	Anuppur	Mango
4	Ashoknagar	Tomato
5	Balaghat	Kodo-Kutki
6	Barwani	Ginger
7	Betul	Mango
8	Bhind	Bajra
9	Bhopal	Guava
10	Burhanpur	Banana
11	Chhatarpur	Betel vine
12	Chhindwara	Potato
13	Damoh	Tomato
14	Datia	Tomato
15	Dewas	Potato
16	Dhar	Custard Apple
17	Dindori	Kodo-Kutki
18	Guna	Coriander
19	Gwalior	Potato
20	Harda	Onion
21	Hoshangabad	Guava
22	Indore	Potato
23	Jabalpur	Green Pea
24	Jhabua	Tomato
25	Katni	Tomato
26	Khandwa	Onion
27	Khargone	Chill
28	Mandla	Kodo-Kutki
29	Mandsaur	Garlic
30	Morena	Mustard Products
31	Narsinghpur	Sugarcane Products & Pigeon Pea
32	Neemuch	Coriander
33	Niwari	Ginger
34	Panna	Aonla
35	Raisen	Tomato
36	Rajgarh	Orange/ Citrus
37	Ratlam	Garlic
38	Rewa	Turmeric
39	Sagar	Tomato
40	Satna	Tomato
41	Sehore	Guava
42	Seoni	Custard Apple
43	Shahdol	Turmeric
44	Shajapur	Onion
45	Sheopur	Guava
46	Shivpuri	Tomato
47	Sidhi	Mango
48	Singrauli	Mango

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

49	**Tikamgarh**	Ginger
50	**Ujjain**	Onion
51	**Umaria**	Mango
52	**Vidisha**	Onion
TOTAL	**52**	

नरसिंहपुर जिले में स्थित मन्डियों में गुड़ का विक्रय से प्राप्त राजस्व का विश्लेषण

तालिका क्रंमाक - 1

नरसिंहपुर जिले में स्थित मन्डियों में गुड़ की वर्षवार आवक (क्विंटल में)

क्रं	वर्ष	नरसिंहपुर	करेली	गाडरवारा	तेंदूखेड़ा	गोटेगांव	कुल योग
1	2018-19	357886	734406	175160	80731	76560	1424743
2	2019-20	340557	633412	149231	69459	63346	1256005
3	2020-21	206139	379830	96106	23579	19280	724934
4	2021-22	303717	636242	101086	52700	48630	1142375
5	2022-23	247248	448324	75611	70455	64950	906588

स्त्रोत : कार्यालय, कृषि उपज मण्डी नरसिंहपुर, करेली, गाडरवारा, तेंदूखेड़ा, गोटेगांव

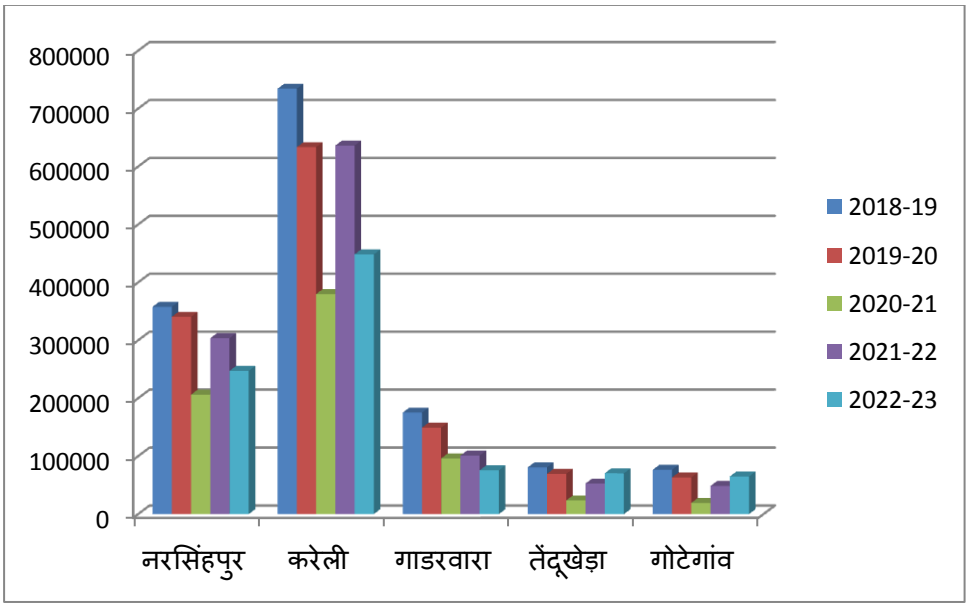

तालिका क्रंमाक 2

नरसिंहपुर जिले में स्थित मन्डियों में गुड़ की आवक वर्षवार रूपये (करोड़ में)

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

क्रं	वर्ष	नरसिंहपुर	करेली	गाडरवारा	तेंदूखेड़ा	गोटेगांव	कुल योग
1	2018-19	80.70	176.25	44.84	19.17	18.18	339.14
2	2019-20	83.43	169.63	36.93	16.67	15.20	321.86
3	2020-21	53.10	53.84	24.26	5.89.	4.82	136.02
4	2021-22	78.96	175.39	27.59	13.70	12.64	308.28
5	2022-23	66.75	130.20	21.24	19.02	17.53	254.74

स्त्रोत : कार्यालय, कृषि उपज मण्डी नरसिंहपुर, करेली, गाडरवारा, तेंदूखेड़ा, गोटेगांव

तालिका क्रंमाक 3 -

नरसिंहपुर जिले में प्रगतिशील किसानों से प्राथमिक संमकों का विश्लेषण

नरसिंहपुर जिले में स्थित लगभग 250 किसान जो उन्नत तरीके से कृषि कार्य में संलग्न है । इनमें से कुछ गुड़ का निर्यात करने वाले प्रगतिशील किसानों से प्राप्त संमको का विश्लेषण निम्नानुसार है -

क्रं	प्रगतिशील किसान का नाम	उत्पाद	गुड़ का अनुमानित निर्यात	अनुमानित बिक्री	निर्यात के क्षेत्र में	रिमार्क
1	श्री राकेश दुबे	जैविक गुड़ (कुशल मंगल ब्रांड)	1500 क्विटल	22500000	दुबई, कतर ,मारीशस, श्रीलंका, ब्रिटेन आदि	आर्गेनिक फार्मिंग में इन्हें इनोवेटिव किसान व कृषि वैज्ञानिक अवार्ड व अनेक फेलोशिप प्राप्त हैं । इन्होने वर्ष 20-21 में लगभग 1200 क्विंटल गुड़ ब्रिटेन को निर्यात किया था। यह लगभग 10 प्रकार से 35 प्रकार के स्वाद (फलेवर) में गुड़ का निर्माण करते हैं।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

2	श्री योगेश कौरव	जैविक गुड़ (नर्मदा नेचुरल ब्रांड)	1400 क्विटल	11200000	कतर सउदी अरब ब्रिटेन, यू एस ए पंजाब , महाराष्ट पश्चिम बंगाल ,छत्तीसगढ़, उड़ीसा आदि	आर्गेनिक फार्मिंग में इन्होने काफी सराहनीय कार्य किया है । इन्होने वर्ष 20-21 में लगभग 800 क्विंटल गुड़ ब्रिटेन को निर्यात किया था। इनका गुड़ आनलाइन मार्केटिंग वेबसाइट पर भी उपलब्ध है।
3	श्री रविशकंर रजक	जैविक गुड़	90 क्विटल	765000	हैदराबाद की कंपनी के माध्यम से निम्न देशों में निर्यात हेतू अनुबंध किया है सऊदी- अरब अमेरिका दक्षिण अफ्रीका	इनके द्वारा 10 एकड़ रकबे में गन्ने की जैविक खेती की जा रही है। इनका गुड़ देश के विभिन्न शहरों के अलावा एक स्टेशन एक उत्पाद के तहत करेली रेलवे स्टेशन पर भी उपलब्ध है।
4	श्री कृष्णपाल पटैल	जैविक गुड़	1500 क्विटल	12000000	पंजाब राजस्थान नोएडा हरियाणा महाराष्ट्र तमिलनाडु गुजरात उत्तराखंड दिल्ली आदि	इनके द्वारा 10 एकड़ रकबे में गन्ने की जैविक खेती की जा रही है। इनके द्वारा अपने प्राकतिक / जैविक प्रक्षेत्र का MPSOCA से जैविक प्रमाणीकरण कराया है।

5	श्री कृष्णपाल लोधी	जैविक गुड़	800 क्विटल	6400000	पंजाब राजस्थान नोएडा हरियाणा महाराष्ट्र तमिलनाडु गुजरात उत्तराखंड दिल्ली आदि	इनके द्वारा 7 एकड़ रकबे में गन्ने की जैविक खेती की जा रही है।
6	श्री स्वदेश कोठारी	जैविक गुड़	180 क्विटल	720000	पंजाब राजस्थान नोएडा हरियाणा महाराष्ट्र तमिलनाडु गुजरात उत्तराखंड दिल्ली आदि	इनके द्वारा 5 एकड़ रकबे में गन्ने की जैविक खेती की जा रही है।
7	श्री इन्द्र कुमार मालवीय	जैविक गुड़ एंव सामान्य गुड़	150 क्विटल जैविक गुड़ एंव सामान्य गुड़ 900 क्विटल	900000 2700000	देश के विभिन्न स्थानों में जैविक फसलों का विक्रय करते हैं।	इनके द्वारा 5 एकड़ रकबे में गन्ने की जैविक खेती की जा रही है।
8	श्री सुरेन्द्र पटेल	जैविक गुड़ एंव सामान्य गुड़	60 क्विटल जैविक गुड़ एंव सामान्य गुड़ 850 क्विटल	360000 2380000	मप्र के विभिन्न शहरों में ।	इनके द्वारा 3 एकड़ रकबे में गन्ने की जैविक व 17 एकड़ में गन्ने की सामान्य खेती की जा रही है।
9	श्री अमित	जैविक	30 क्विटल	180000	मप्र के	इनके द्वारा 2 से

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

	शर्मा	गुड़ एंव सामान्य गुड़	जैविक गुड़ एंव सामान्य गुड़ 550 क्विटल	1540000	विभिन्न शहरों में।	3 एकड़ रकबे में गन्ने की जैविक व 10 एकड़ में गन्ने की सामान्य खेती की जा रही है।
10	उपेन्द्र सिंह कौरव	जैविक गुड़ एंव सामान्य गुड़	40 क्विटल जैविक गुड़ एंव सामान्य गुड़ 460 क्विटल	240000 1288000	मप्र के विभिन्न शहरों में।	इनके द्वारा 2 से एकड़ रकबे में गन्ने की जैविक व 8 एकड़ में गन्ने की सामान्य खेती की जा रही है।

परीक्षण-

प्रस्तुत शोध तालिका क्रंमाक 1 व 2 के परीक्षण से स्पष्ट है कि जिले की पांचो मन्डियों में गुड़ की आवक होती है, लेकिन गुड़ आवक में करेली मंडी का प्रथम स्थान है इसके बाद क्रमश: गाडरवारा, नरसिंहपुर , तेंदूखेड़ा व गोटेगांव मंडी का स्थान है। वर्षवार अध्ययन करने से स्पष्ट है कि वर्ष 18-19 में गुड़ की आवक सर्वाधिक थी वर्ष 19-20 में पूर्व वर्ष की तुलना में गुड़ की आवक में कमी का प्रमुख कारण कोरोना काल की शुरूआत व वर्ष 20-21 में कोरोना काल के पीक के कारण आवक में कमी है। वर्ष 21-22 से सामान्य जीवन की शुरूआत होने के कारण पुन: गुड़ निर्माण में वृद्धि से गुड़ आवक में वृद्धि हुई है। वर्ष 22-23 में किसानों द्वारा अंतर्रवर्ती फसलों के उत्पादन के कारण गन्ने की उत्पादकता में मामूली कमी से गुड़ निर्माण में कमी के कारण गुड़ की आवक में कमी हुई है। करेली मंडी क्षेत्र में सर्वाधिक गुड़ उत्पादन के कारण गुड़ से आवक अधिक होती है इसी कारण एक जिला एक उत्पाद योजना के अंर्तगत करेली के गुड़ को विशिष्ट उत्पाद के रूप में चयनित होने के कारण आने वाले वर्षो में गुड़ से आवक में अत्यधिक वृद्धि की पूर्ण संभावनायें हैं , जो जिले के आर्थिक विकास में सहभागीता का महत्वपूर्ण कारक होगा । नरसिंहपुर जिले में लगभग गुड़ के सामान्य व जैविक विक्रय से 350 करोड़ की आवक किसानों को प्राप्त होती है।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

तालिका क्रंमाक 3 के परीक्षण से स्पष्ट है कि जिले में सामान्य गुड़ के साथ-साथ जैविक गुड़ के उत्पादन की अत्यधिक संभावनायें विद्वान है । एक जिला एक उत्पाद योजना के अंतर्गत गुड़ के चयन होने से जिले के गुड़ को अंतर्राष्टीय स्तर तक विशिष्ट पहचान प्राप्त होगी , जिससे किसानों की आवक में कई गुना वृध्दि होने की पूर्ण संभावनायें हैं ।

गन्ने की अधिक उत्पादकता व इससे निर्मित सामान्य व जैविक गुड़ निर्माण की अधिकता व इसके विक्रय (निर्यात सहित) से प्राप्त 350 करोड़ की आय जो जिले के किसानों की आर्थिक सबंलता में सकारात्मक वृध्दि का प्रमुख कारण है। अत: उक्त परिकल्पना सिद्ध होती है।

निष्कर्ष-

म.प्र. के सर्वाधिक गन्ना उत्पादक जिला नरसिंहपुर में कुल उत्पादन का 30.35 प्रतिशत भाग खाण्डसारी एंव गुड़ उत्पादक इकाईयों द्वारा किया जा रहा है । जिसमें गुड़ के स्थानीय ,प्रादेशिक, व देश में विक्रय व विदेश में निर्यात से लगभग 350 करोड़ की आय प्राप्त हो रही है , जो जिले के किसानों की आर्थिक प्रगति का महत्वपूर्ण कारण बन रही है । ODOP योजना का क्रियान्वयन व इसके अधीन गुड़ के चयन से इसमें दुगुनी वृद्धि होने की पूर्ण संभावनाएं विद्यमान है।

सुझाव-

म.प्र.के कुल गन्ना उत्पादन का 65 प्रतिशत भाग अकेले नरसिंहपुर जिले में उत्पादन होता है। इसका प्रयोग चीनी मिलो द्वारा चीनी , खाण्डसारी व गुड़ इकाईयों के द्वारा सामान्य एंव जैविक गुड़ निर्माण में किया जा रहा है। गुड़ उत्पादन की अधिक संभावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं -

(1) गन्ने का अधिक उत्पादन हेतू किसानों को फसलों के आधार पर (रबी ,खरीफ व जायद) अंतर्रवती फसलों हेतु तकनीकी , पारम्परिक, व्यवसायिक कृषि कार्य व फसलों के विपणन का सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने हेतु प्रशिक्षण प्रदान किया जाए । इस हेतु मृदा

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

परीक्षण उन्नत सयंत्र तकनीकी यंत्रो का प्रयोग उन्नत बीज , कम समय में होने वाली उन्नत किस्मों व अधिक पैदावार की किस्मों के प्रयोग हेतु प्रशिक्षण दिया जावे।

(2) गन्ना के उत्पादन का प्रयोग गुड़ बनाने हेतु प्रेरित किया जावे । इस हेतु किसानों को समुचित प्रशिक्षण दिया जावे व गुड़ बनाने में आने वाली समस्याओं जैसे श्रम समस्या ,गन्नों की समुचित उपलब्धता , बिजली की समस्या , मांग के अनुरूप गुड़ की गुणवत्ता तैयार करना आदि का सरकारी स्तर पर इन समस्याओं का शीघ्र समाधान किया जावे।

(3) गुड़ के स्थानीय ,प्रादेशिक ,देश व विदेश स्तर पर गुड़ की अलग पहचान स्थापित करने के लिए एक जिला एक उत्पाद योजना के माध्यम से गुड़ की ब्राडिंग, विपणन व निर्यात में आने वाली बाधाओं का जिला स्तर पर एकल खिड़की की स्थापना कर शीघ्र समाधान किया जावे ।

(4) देश विदेश में जिले के गुड़ (सामान्य व जैविक) को विशिष्ट पहचान और विस्तार व विक्रय हेतु विभिंन्न स्थानों पर गुड़ मेंलों का आयोजन किया जावे । ऑनलाइन मार्केटिगं प्लेटफार्म जैसे फिलिप कार्ड , अमेजान , स्नेपडील आदि बेवसाइटों पर गुड़ विक्रय की व्यवस्था की जावे।

(5) स्थानीय स्तर पर जिले की मण्डियों में गुड़ विक्रय हेतु अलग से व्यवस्था की जावे साथ ही किसानों को समुचित भुगतान समय पर प्राप्त हो ।

सन्दर्भ सूची

1. "एक जिला -एक उत्पाद", उत्तर प्रदेश की वेबसाइट **www**.odopup:in ,

2.खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय भारत सरकार की वेबसाइट www.mofpi.gov.in

3.किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, मध्यप्रदेश की वेबसाइट www.mpkrishi.mp.gov.in

4.मध्य प्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड, मध्यप्रदेश की वेबसाइट http://mpmandiboard.gov.in/

5.जिला नरसिंहपुर,मध्य प्रदेश की वेबसाइट www.narsinghpur.nic.in

6. भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ की बेबसाईट www.iisr.icar.gov.in

7. राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर की बेबसाईट www.nsi.gov.in

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

8. अग्रवाल,डॉ मनीष कुमार (2013) :" मध्य प्रदेश के कृषि एवं औद्योगिक विकास में गन्ना उत्पादन एवं विपणन का विश्लेषणात्मक अध्ययन" पीएचडी थीसिस,रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

9 . घोड़ेके डॉ.अभय (2017): "मध्य प्रदेश में गन्ने की खेती एवं उस पर आधारित उद्योगों के विकास की संभावनाएं " पीएचडी थीसिस, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर